www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-8* *August 2025*

भारतीय इतिहास में बौद्ध धर्म के उत्थान का कारणः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शिल्पा कुमारी

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर।

डॉ.सत्यार्थ प्रकाश

शोध निदेशक, सहायक प्राध्यापक, के. के. एम. कालेज, जमुई, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर।

सारांशः बौद्ध धर्म प्राचीन भारत में विकसित हुआ एक धर्म है। इसका विकास भारत में लगभग 2500 वर्ष पूर्व, ईसा पूर्व छठी से चौथी शताब्दी के बीच हुआ था। गौतम बुद्ध ने लोगों के बीच दार्शनिक विचारों की इस परंपरा की शुरुआत की, जो बाद में एक धर्म बन गई। भारत में बौद्ध धर्म एक प्रसिद्ध धर्म है। गौतम बुद्ध की मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने जनता के बीच उनके विचारों को फैलाने का आंदोलन शुरू किया। इतना ही नहीं, उस समय के कई राजाओं ने भी इस धर्म को अपनाया और इसका प्रसार किया। साथ ही, विश्वविद्यालयों और विभिन्न देशों के व्यापारिक संबंधों ने भी बौद्ध धर्म के प्रसार में योगदान दिया।

बौद्ध धर्म, जिसकी स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में सिद्धार्थ गौतम ("बुद्ध") द्वारा की गई थी, अधिकांश एशियाई देशों में एक प्रमुख धर्म है। बौद्ध धर्म ने अनेक रूप धारण किए हैं, लेकिन प्रत्येक रूप बुद्ध के जीवन अनुभवों, उनके धर्म या धम्म नामक उपदेशों और उनकी शिक्षाओं के सार से धार्मिक जीवन के आदर्शों को ग्रहण करने का प्रयास किया गया है।

उदार हृदय, दयालु वाणी और सेवा व करुणा का जीवन, वे बातें हैं जो मानवता का नवीनीकरण करती हैं। युद्ध संतप्त मानव के लिए महात्मा बुद्ध द्वारा स्फुटित यह वचन युगों तक शांति और सद्भावना का संदेश हैं। समय का कोई भी कालखंड हो, परिस्थितियाँ कैसी भी रही हों अध्यात्म का केंद्र बिन्दु हमेशा भारत ही रहा है और यही कारण है कि भारत के लोगों द्वारा धर्म को इतनी मान्यता दी जाती है।

कुंजीः बौद्ध धर्म, उपदेश, शिक्षा, नवीनीकरण।

प्रस्तावना : "धार्यते इति धर्मः" अर्थात जो धारण करने योग्य हो वही धर्म है। धर्म किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास रखने वाली एक ऐसी परंपरा है जो मानव मूल्यों और व्यवहारों को निर्देशित करती है। हिन्दू धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म की तरह ही बौद्ध धर्म का उदय भी भारत की से ही हुआ था। ईसा से 563 साल पहले जन्में सिद्धार्थ, कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन और महारानी महामाया के पुत्र थे। उनके सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध बनने की यात्रा अत्यंत रोचक भी और महत्वपूर्ण भी क्योंकि उनकी इसी यात्रा के कारण बौद्ध धर्म अस्तित्व में आया था। सिद्धार्थ के जन्म के बाद ज्योतिषियों ने बालक के ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति को देखकर यह भविष्यवाणी की कि युवराज सिद्धार्थ यशस्वी तो बहुत होंगे लेकिन कुंडली में राजयोग कहीं दिखाई नहीं देता और कुंडली के अनुसार युवराज के सन्यासी बनने की प्रबल संभावनाएँ हैं।

बौद्ध धर्म के सिद्धांत और शिक्षाएँ बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य बताए गए हैंः–

- पहले सत्य के अनुसार दुनिया में दुख है।
- दूसरा सत्य कहता है कि संसार के हर दुख का कारण इच्छाएँ हैं।
- तीसरे आर्य सत्य के अनुसार संसार के सभी दुखों का अंत संभव है और इसके लिए चौथे आर्य सत्य में अष्टांग मार्ग का उपाय बताया गया है।

बुद्ध के जीवन काल में ही बौद्ध धर्म का संगठित रूप सामने आ चुका थ किंतु उनके निर्वाण के बाद उनके शिष्यों द्वारा

इस धर्म को तेजी से फैलाया गया। छठी शताब्दी ई. पू. में भारतवर्ष में जितने क्रांतिकारी आन्दोलन आरम्भ हुए उनमें सबसे अधिक लोकप्रिय बौद्ध धर्म ही था। कुछ ही समय में इसका प्रचार सम्पूर्ण उत्तरी भारत में हो गया। धीरे–धीरे दक्षिण भारत में भी इसका प्रचार हुआ और कालान्तर में न केवल सम्पूर्ण भारत में वरन् बर्मा, श्रीलंका, तिब्बत, चीन, जापान, मध्य एशिया, इण्डोचीन, कम्बोज आदि देशों में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हो गया। बौद्ध धर्म की उन्नति होती चली गई।

'बौद्ध' शब्द संस्कृत भाषा के 'बुद्ध' शब्द से बना है । बुद्ध उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे बोधि अथात् ज्ञान प्राप्त हो गया है। बुद्ध के अनुयायियों को बौद्ध कहते हैं और जिस धर्म का ये लोग अनुसरण करते हैं उसे बौद्ध धर्म कहते हैं। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध थे। उनका जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु नामक एक छोटे से गणराज्य के प्रधान शुद्धोदन के सबसे के रूप में हुआ।

बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ की माता का नाम महामाया अथवा मायादेवी था जो गोरखपुर जिले में स्थित एक गणराज्य के प्रधान की कन्या थी। जब मायादेवी नैहर जा रही थी तो मार्ग में लुम्बिनी नामक वन में, जो नेपाल की तराई में स्थित है, सिद्धार्थ का जन्म हुआ। प्रसव पीड़ा से मायादेवी का निधन हो गया। सिद्धार्थ का पालन–पोषण उनकी विमाता प्रजापति देवी गौतमी ने किया। सिद्धार्थ के जन्म पर ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि राजकुमार या तो महान् चक्रवर्ती सम्राट होगा या महान् सन्यासी होगा। गौतमी द्वारा पालन किये जाने के कारण सिद्धार्थ को गौतम कहा जाता है तथा शाक्य क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के कारण उन्हें शाक्य मुनि कहा जाता है। बुद्धत्व अर्थात् ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद वे बुद्ध कहलाये। सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन सूर्यवंशी शाक्य क्षत्रिय थे तथा उनका राज्य कपिलवस्तु वर्तमान बस्ती जिले की पूर्वी सीमा पर स्थित था। युवा होने पर सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी से किया गया जिससे उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया।

सिद्धार्थ मगध की राजधानी राजगृह गये जहां उच्च कोटि के ब्राह्मण आचार्यों के अनेक आश्रम स्थित थे। सिद्धार्थ उनके शिष्य बन गये परन्तु शीघ्र ही उन्हें निराश होकर वहां से चला जाना पड़ा क्योंकि ब्राह्मण आचार्य उन्हें निवृत्ति का मार्ग नहीं दिखा सके। जब सिद्धार्थ ने राजगृह छोड़ा तब पांच और साथी उनके साथ हो लिए। सिद्धार्थ ने गया के समीप उरुवेल नामक वन में पांच साथियों के साथ प्रवेश किया और छः वर्ष तक ऐसी कठिन तपस्या की कि उनका शरीर सूखकर कांटा हो गया परन्तु उन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई।

तब वे इस नतीजे तक पहुंचे कि शरीर को कष्ट देने से कोई लाभ नहीं और स्वस्थ शरीर से ही ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके पांचों साथियों की श्रद्धा उनमें समाप्त हो गई और वे उनका साथ छोड़कर काशी की ओर चले गए। अब सिद्धार्थ ने अकेले ही चिन्तन करना प्रारंभ किया। 35 वर्ष की अवस्था में वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि में जब वे एक बरगद वृक्ष के नीचे समाधि लागा कर चिन्तन में लीन थे तब उन्हें सत्य के दर्शन हुए।

बौद्ध धर्म में इस घटना को 'सम्बोधि' (उचित ज्ञान की प्राप्ति) कहा गया है। सिद्धार्थ इसी समय से बुद्ध कहलाये क्योंकि उन्हे बोधि अर्थात् ज्ञान प्राप्त हो गया था और उनके द्वारा प्रचलित धर्म, बौद्ध धर्म कहलाया। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें सम्बोधि प्राप्त हुई थी वह बोधि वृक्ष कहलाया और गया का नाम बोधिगया पड़ गया।

सम्बोधि में सिद्धार्थ को 'प्रतीत्य समुत्पात' के सिद्धान्त का बोध हुआ और उन्होंने 'निर्वाण' प्राप्त कर लिया। प्रतीत्य का अर्थ होता है प्रतीति अथवा विश्वास और समुत्पात का अर्थ होता है उत्पत्ति। इस प्रकार 'प्रतीत्य समुत्पात' का शब्दिक अर्थ हुआ उत्पत्ति में विश्वास।

व्यापक अर्थ में 'प्रतीत्य समुत्पात' का अर्थ है, 'संसार की सभी वस्तुएं और वासनाएं कार्य और कारण पर निर्भर हैं।' इसका तात्पर्य यह हुआ कि कार्य तथा कारण में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है और जो कुछ भी इस संसार में होता है उसका कोई न कोई कारण अवश्य है। 'निर्वाण' का शाब्दिक अर्थ होता है मुक्ति, परन्तु व्यापक अर्थ में 'निर्वाण' सांसारिक तृष्णाओं, दुःखों और बन्धनों से छुटकारा पा लेने की अवस्था है, जो कि चरम सत्य है। इस प्रकार बुद्ध को संसारिक बन्धनों से छुटकारा पाने का मार्ग ज्ञात हो गया। मान्यता है कि बुद्ध अपने धर्म का प्रचार नहीं करना चाहते थे परन्तु जब उन्होंने देखा कि संसार के लोग ना–ना प्रकार के दुःखों में डूबे हुए हैं और उनसे छुटकारा पाने के लिए छटपटा रहे हैं तब उनका कोमल उदार हृदय अपार करुणा से पिघल गया और उन्होंने अपने धर्म का प्रचार करने का निर्णय लिया।

बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश काशी के समीप सारनाथ नामक स्थान पर अपने उन पांचों सथियों को दिया जो उनका साथ छोड़ कर चले गए थे। बौद्ध साहित्य में उस प्रथम उपदेश को 'धर्म–चक्र–प्रवर्तन कहा जाता है जिसका अर्थ है धर्म रूपी चक्र का चलाना। बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा– "चारों दिशाओं में जाओ और अपने धर्म का प्रचार करो। "

बुद्ध ने स्वयं भी अपने जीवन के शेष 45 वर्ष अपने धर्म का प्रचार करने में व्यतीत किये। उन्होंने अपने उपदेश जनसाधारण को पालि भाषा में दिये। उनके धर्म प्रचार का प्रधान क्षेत्र आधुनिक बिहार, उत्तर प्रदेश का कुछ भाग तथा नेपाल था। बुद्ध के व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण था कि राजा तथा रंक सभी उनके उपदेशों के प्रभाव आ जाते थे। बुद्ध के जीवन काल में ही उनके अनुयायियों का एक अच्छा संघ बन गया। इन अनुयायियों के कारण बौद्ध धर्म की उन्नति बड़ी तेजी से हुई।

2011 की जनगणना के अनुसार 100,000 से अधिक बौद्ध जनसंख्या वाले राज्य

राज्य	बौद्ध जनसंख्या	बौद्ध जनसंख्या (%)
महाराष्ट्र	65,31,200	5.81%
पश्चिम बंगाल	2,82,898	0.31%
मध्य प्रदेश	2,16,052	1.71%
उत्तर प्रदेश	2,06,285	0.11%
सिक्किम	1,67,216	27.39%
अरूणाचल प्रदेश	1,62,815	11.77%
त्रिपुरा	1,25,385	3.41%
जम्मू कश्मीर	1,12,584	0.90%

साँची और भरहुत के अभिलेखों से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि इन बौद्ध विहारों को उन लोगों से भी दान मिला जो बौद्ध उपासक नहीं थे। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि जनसाधारण के लिए ब्राह्मण धर्म से बौद्ध धर्म में धर्मान्तरण बुद्ध और संघ के प्रति श्रद्धा व संघ को दान तक ही सीमित था। इस तरह के धर्मान्तरण के द्वारा एक अलग व विषेष धार्मिक या सामाजिक समुदाय की स्थापना नहीं की गई। बौद्ध धर्म की यह कमी और भी स्पष्ट दिखाई पड़ती है जब उसकी तुलना इस्लाम या ईसाई धर्म से की जाए जिनमें कि धार्मिक व सामाजिक स्तर पर समुदाय की पहचान अनन्य और जलरुद्ध (exclusive and watertight) थी। इस तरह बौद्ध धर्म ऐसे उपासकों का एक संगठित समूह बनाने में असफल रहा जो धर्मान्तरण के पश्चात् संघ में जाने या दान देने के साथ–साथ स्वयं को सामाजिक तौर पर भी षेष समुदाय से अलग समझता। जनसाधारण के बीच बौद्ध धर्म एक सम्प्रदाय बनकर रह गया था। षायद यही कारण था कि जनसाधारण ने बौद्ध धर्म को एक अलग व स्वतंत्र धर्म के रूप में माना ही नहीं। इसलिए यह कोई आष्चर्य वाली बात नहीं है कि बौद्ध उपासक धीरे–धीरे ब्राह्मणों के समुदाय में लुप्त हो गए।

अशोक के समय में धार्मिक प्रचार चार आर्य सत्यों की अपेक्षा प्राकृतिक धर्म के सामान्य तथ्यों पर आधारित था । अशोक के अभिलेखों में बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांतों और गंभीर विचारों की तलाष करना व्यर्थ है क्योंकि वे न तो चार आर्य सत्यों या आष्टांगिक मार्ग का उल्लेख करते हैं और न ही प्रतीत्यसमुत्पाद या बुद्ध के अलौकिक गुणों का। वे केवल उन सार्वभौमिक सदाचारों और नीतियों का वर्णन करते हैं जो सामान्य उपासकों के लिए पहले से ही पिटक साहित्य में सूत्रबद्ध हो चुके थे, जैसे कि दीघ निकाय के लक्खण सुत्तंत" और सिंगालोवाद सुत्तंत और मज्झिम, संयुत्त तथा अंगुत्तर निकाय के बहुत से गहपतिवग्ग । बौद्ध भिक्षु स्वयं जब धर्मविजय पर निकलते थे तो वे अपने श्रोताओं को धर्म की सच्चाइयों की बातें कम बताते थे और उन्हें मृत्यु, नरक, दुःख, व भूतों की कहानियाँ बताकर भयभीत अधिक करते थे। भिक्षुओं का मुख्य उद्देश्य, भारतीय आबादी को अपने पूर्वजों के विश्वासों और अन्धविश्वासों से तोड़ना नहीं बल्कि शाक्यपुत्रों के लिए समर्थकों व दानकर्त्ताओं को एकत्रित करना था। भिक्षुओं द्वारा दूसरे भिक्षुओं के लिए तैयार किए गए सिद्धांतों के रहस्यों को बहुत ही कम लोगों ने जानने की कोषिष की। यदि जनसाधारण त्रिरत्न में शरण लेकर संघ – समुदाय को भोजन, वस्त्र, दान, बिस्तर, दवा इत्यादि देते रहते थे, तो वे समझते थे कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य को पूरा कर लिया। आत्मदमन, ब्रह्मचर्य, धनहीनता, आत्मसंयम तथा मननषीलता जैसे भिक्षुओं के लिए बनाए गए सदाचार के गुणों का पालन करना जनसाधारण के लिए यदि असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवष्य था। उन्हें अपने परिवारों का लालन–पालन करना होता था, नौकरों पर हुक्म चलाना होता था और उन्हें अपनी संपत्ति की देखभाल करना और उसे बढ़ाना होता था। जिन चीजों को वे निष्क्रिय सदाचार से खो देते थे उन्हें वे क्रियाशील सदाचार से पा लेते थे, और उनके विचार में पहलेवाला बादवाले के बराबर था। "फिर भी यह सत्य है कि उपासक, था। कमियाँ थीं, बौद्ध धर्म और विधर्मी अन्धविश्वासों के बीच एक समझौता – सा स्थापित कर पाने के लिए उस लोकप्रिय सीमा से बहुत कम ही बाहर आया जिसमें उसकी जड़ें जमी थीं।

बौद्ध धर्म की अनुकूलता के सर्वोच्च गुण के कारण विदेशों में इसे अपने प्रसार में सफलता प्राप्त हुई। लेकिन ब्राह्मणवाद के संदर्भ में यही गुण भारत में इसका प्रबल शत्रु बना और उपासककृस्तर पर इसके स्वरूप को पहचान से परे बदल डाला। "महायान ने मूर्तिपूजा, प्रार्थनाओं व अभिचारों, आडम्बरी समारोहों व कर्मकाण्डों पर बड़ा जोर डाला, अनेक जन – विश्वासों को सम्मिलित कर लिया और जनसाधारण की भावनात्मक माँगों के लिए जगह बनाई, और ऐसा करते हुए बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म के सीधा करीब पहुँच गया। इस प्रक्रिया ने दोनों के बीच की भिन्नता को समाप्त कर डाला। भारत के उपासकों व उपासिकाओं ने बुद्ध और विष्णु, शिव और अवलोकित, तथा तारा और पार्वती की पूजा में कोई अन्तर नहीं समझा। बोधिसत्त्वों जैसे सिद्धान्तों के विकास के द्वारा बौद्ध धर्म ब्राह्मण धर्म के निकट और भी तेज़ी से चला गया। विषाल बोधिसत्त्वों को पूर्णतः अलौकिक स्वभाव एवं गुण से युक्त बताया गया, जो एक आम व्यक्ति के रूप में संघर्ष करके सफलता पाने की अपेक्षा यथार्थ देवों के रूप में जिस तरीके से सांसारिक वरदान और आध्यात्मिक आशीर्वाद बाँटने लगे वह ब्राह्मणीय देवताओं से भिन्न नहीं था। अन्त में ऐतिहासिक बुद्ध की जगह भी इन आकृतियों द्वारा हड़प ली गई, हालाँकि बुद्ध आंशिक रूप से प्राणियों में सबसे पवित्र बने रहे पर जनसामान्य का झुकाव मंजुश्री और अवलोकितेश्वर जैसे महान बोधिसत्त्वों की ओर अधिक रहा।

परिणामतः बौद्ध धर्म ने अपने आपको ब्राह्मण धर्म के अनिष्टकारी विश्वासों तथा प्रथाओं के प्रति खुला रखा। बुद्ध को विष्णु का अवतार मान लिए जाने के बाद तो बौद्ध धर्म के पैरों के नीचे की जमीन ही खिसक गई।

निष्कर्ष में, यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म का पतन दो विभिन्न स्तरों पर हुआ जो समयानुसार और परिस्थितियों में पूर्णतः अलगदृअलग थेकृ नीचे से पतन और ऊपर से पतन। नीचे से पतन इसके जन्म के समय से ही उपासकों के स्तर पर हुआ। यह बौद्ध धर्म की प्रकृति में ही छिपा था क्योंकि इसके संस्थापक गौतम बुद्ध ने अपने अनुयायियों को दूसरे धार्मिक सम्प्रदायों, विषेषकर मुख्य ब्राह्मणवादी धारा, से अलग समुदाय के रूप में पहचान नहीं दी। मठों की बर्बादी और उनके अपसर्जन से ऊपर से पतन शुरू हुआ। सबसे प्रमुख कारण इसमें नगरीकरण का पतन प्रतीत होता है जिससे बौद्ध धर्म की मठ– व्यवस्था अपरिहार्य रूप से जुड़ी थी।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. सरकार, डी. सी., सेलेक्ट इनस्क्रिप्शंस, वॉल्यूम 1, कलकत्ता, 1965, पृ. 119.
2. मित्रा, देबाला, बौद्ध स्मारक, दिल्ली, 1971, पृष्ठ 142 ।
3. हंटिंग्ट, सुसान, द आर्ट ऑफ एन्शियंट इंडिया, न्यू यॉर्क, 1985, पृ.368.
4. गैल, एम., ब्रॉन्जेस ऑफ ईस्टर्न इंडिया, बॉम्बे, 1974, पृ. 95.
5. मजूमदार, आर. सी., हिस्ट्री ऑफ बंगाल, वॉल्यूम 1, कलकत्ता, 1943, पृ. 210.
6. तारानाथ, हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म इन इंडिया, ट्रांसलेटेड बाय लामा चिम्पा, दिल्ली, 1970, पृ. 225.
7. थापर, रोमिला, अर्ली इंडिया, पेंगुइन, 2002, पृ. 305.
8. जिमर, एच., द आर्ट ऑफ इंडियन एशिया, वॉल्यूम 1, न्यू यॉर्क, 1955, पृ. 276.
9. मुखर्जी, बी. एन., द राइज़ ऑफ द पाल एम्पायर, कलकत्ता, 1965, पृ.87.
10. ठाकुर, उ., एजुकेशन इन एन्शियंट एंड मिडीवल इंडिया, पटना, 1969, पृ. 122.
11. पाल, प्रतापादित्य, द आर्ट्स ऑफ नेपाल, वॉल्यूम 1, लीडेन, 1974, पृ. 97.
12. बनर्जी, आर. डी., द पालास ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1915, पृ. 134.
13. राय, निहार रंजन, बंगलिर इतिहास, कलकत्ता, 1945, पृ. 202.
14. Wagle, N., Society at the Time of the Buddha, Bombay: Popular Prakashan, 1966.
15. Waley, A., "Did the Buddha die of Eating Pork?" Mélanges chinois et bouddhiques, Bruxelles, I, 1932: 343-354.
16. Walli, Koshelya, The Conception of Ahimsa in Indian Thought According to Sanskrit Sources, Varanasi: Bharata Manisha, 1974.
17. Walters, Jonathan, "A Voice from the Silence: the Buddha's Mother's Story," History of Religions 33/4, 1994: 358-379.
18. Warder, A.K., "On the Relationship between Buddhism and other Contemporary Systems," BSOAS, xviii, 1956.
19. Warder, A.K., Indian Buddhism, Delhi: Motilal Banarsidass, 1970.
20. Warder, A.K., An Introduction to Indian Historiography, Bombay, 1972.

Cite this Article-

'शिल्पा कुमारी; डॉ. सत्यार्थ प्रकाश', "भारतीय इतिहास में बौद्ध धर्म के उत्थान का कारणः एक विष्लेशणात्मक अध्ययन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800019

Published Date- 11 August 2025